समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

○ प्रकाशन दिनांक : १५ दिसम्बर २०२५ ○ वर्ष : २१ ○ अंक : ०६ (निरंतर अंक : ३४२) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

मातृ-पितृ पूजन दिवस (१४ फरवरी)

एक ऐसा अभियान जिससे होता...

माता-पिता का आदर-सत्कार

नयी पीढ़ी का चरित्र-निर्माण

नैतिक उत्थान, दुष्प्रवृत्तियों पर रोक

विदेशों में भी सुसंस्कार-सिंचन

विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों को लाभ

मैं तो चाहूँगा सभी अपने माता-पिता व गुरुजनों का आदर-पूजन करें । विश्व के सभी लोग सुखी रहें, प्राणिमात्र सुखी रहे -

सबका मंगल, सबका भला !

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

कैसी है ईश्वर की व्यवस्था !

- पूज्य बापूजी

हमारी बुद्धि के पीछे प्रेरक कौन है ? जो हमारी बुद्धि का प्रेरक है वह हमारी बुद्धि में सत् दे, हमें सद्बुद्धि मिले । वासना से असद्बुद्धि होती है और सत्स्वरूप परमात्मा की प्रीति से सद्बुद्धि होती है । सद्बुद्धि सत्सुख को पाती है और वासनावाली बुद्धि विषय-विकारों में तबाह होती है । जो वासनावाली बुद्धि है वह शैतान बना देती है और जो सद्बुद्धि है वह अपने-आपमें ही भगवान का अनुभव करा देती है । ऐसा कौन है जो अपने व्यवहार में विफल होना चाहता है ? सब सफल होना चाहते हैं लेकिन जब सद्बुद्धि से सफल होना चाहते हो तो वह राजी रहेगा और आप असद्बुद्धि से सफल होना चाहते हो तो वह विघ्न डालेगा । यह उसकी कृपा है, उसकी मेहरबानी है ! आप दान-पुण्य करोगे, सत्कर्म करोगे तो वह मदद करेगा । आपकी कमाई के साथ हजारों की कमाई जोड़ देगा लेकिन आप जेब काटोगे तो सिपाहियों को प्रेरित करके मारपीट भी करवायेगा । कितनी सुंदर व्यवस्था है ! है कि नहीं ? आप अधिकारी बनकर सद्बुद्धि से काम करते तो ठीक है, अब भ्रष्टाचार करते-करते खूब पैसे इकट्ठे किये तो आपको लगेगा कि अच्छा, असत् में भी मौज है । लेकिन उन्हीं पैसों का उपयोग बेटे-बेटियों ने, पत्नी ने किया है तो उनके मन-बुद्धि खिन्न होंगे और आपके साथ ऐसा व्यवहार करेंगे कि आपको लगेगा कि 'लो, अपने पाले बेटे-बेटियाँ और परिवार के लोग ऐसा कर रहे हैं !' उनकी तरफ से आपको कोहनियाँ ठुकेंगी । बोलो क्या खयाल है ? जीवनभर जिनके लिए हेराफेरी की, इधर-उधर का अनैतिक व्यवहार किया, वे ही लड़के, बहुएँ, पत्नी और मित्र आपको ऐसा खट्टा अनुभव करा देंगे कि फिर बापूजी याद आयेंगे कि 'चलो संसार में कोई सार नहीं, चलो बापूजी के यहाँ रहें ।' बापूजी के यहाँ लाने की व्यवस्था कौन करवाता है ? **धियो यो नः प्रचोदयात्...** वही बुद्धि का प्रेरक देव ।

कीड़ी में नानो बन बेठो हाथी में तू मोटो क्यूँ ?
बन महावत ने माथे बेठो हांकणवाळो तू को तू ॥... ऐसो खेल रच्यो मेरे दाता ज्याँ देखूं वाँ तू को तू ॥

बस तू ही तू । प्रेमपूर्वक आप व्यवहार चालू करो, आप व्यवहार में सफल हो जायेंगे । सफलता का मतलब यह नहीं कि आपने दस करोड़ कमाना चाहा और कमा लिये । आपने किसीका खून करना चाहा और सफल हो गये । इसका नाम सफलता नहीं है । जिस वृक्ष को फल नहीं लगते वह निष्फल है । ऐसे ही जिसके चित्त में चैतन्य का आनंद फलित नहीं होता उसका जीवन विफल है । आप परमात्मा के नाते, परमात्मा की प्रसन्नता के लिए सद्बुद्धि से व्यवहार करो तो आपका जीवन सफल हो जायेगा ।

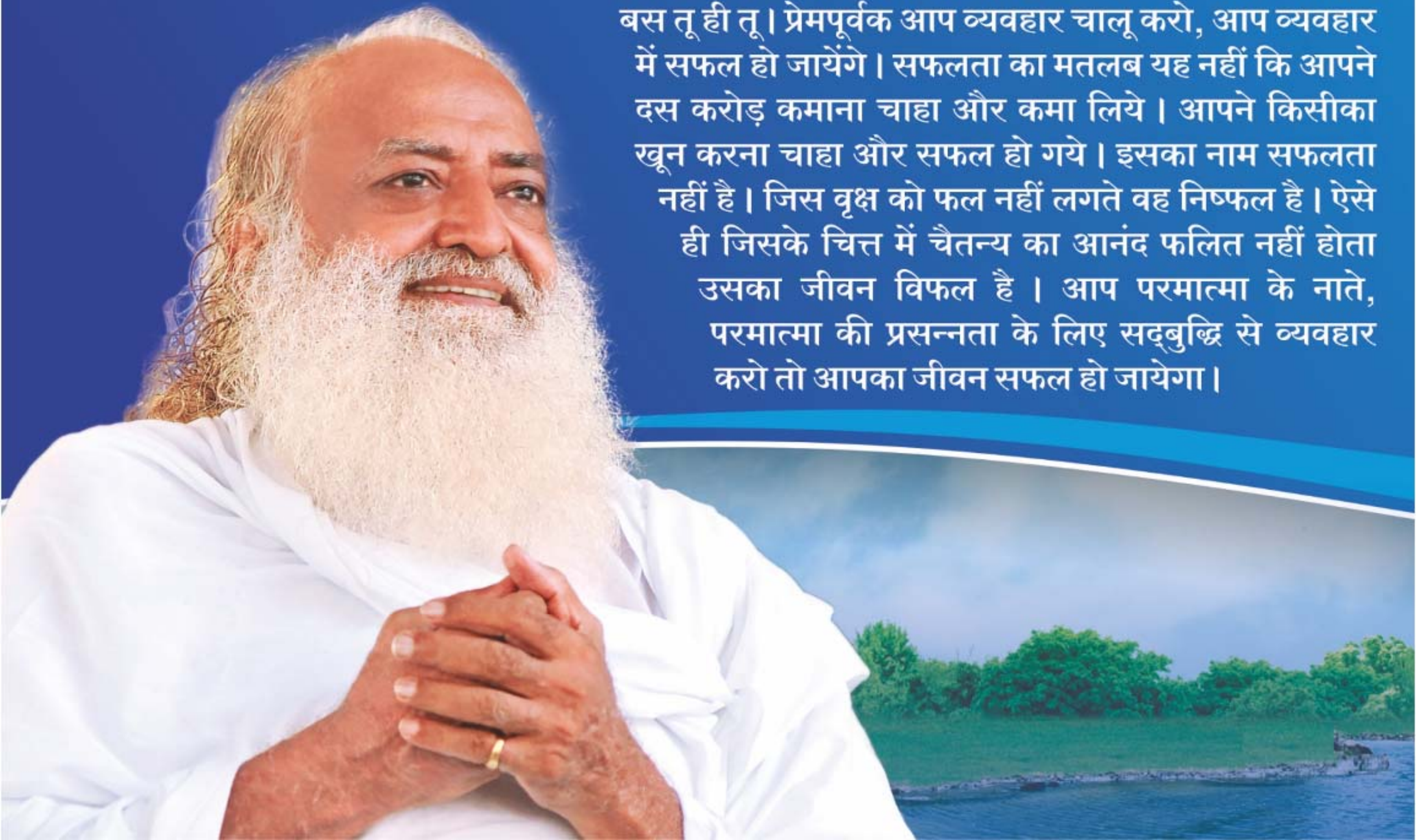

मातृ-पितृ पूजन दिवस : १४ फरवरी

सम्पूर्ण परिवार को
एक सूत्र में बाँधनेवाला पर्व

१४ फरवरी को वेलेंटाइन डे नहीं, गणपति दिवस मनाओ। गणपतिजी ने शिव-पार्वती का पूजन किया और शिव-पार्वती ने उनको हृदय से लगाया एवं प्रीतिपूर्वक आशीर्वाद दिया : ''बेटा ! तू उम्र में तो कार्तिकेय से छोटा है परंतु तेरी समझ अच्छी है (ऊँची है), तेरा पूजन पहले होगा।'' तो ऐसा गणेश-शिव-पार्वती दिवस - मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाओ। यह प्रेम दिवस मनाने से विश्वमानव का मंगल होगा।

१४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस का महापर्व है। इस पर्व की आवश्यकता व महत्ता बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं :

१४ फरवरी को 'आई लव यू, आई लव यू...' बोलकर लड़के लड़कियों को, लड़कियाँ लड़कों को आलिंगन करें... इससे तबाही होती थी। प्यार का मतलब यह नहीं कि शरीर को चिपकना। प्रेम हो तो निर्दोषता का हो, पवित्र भाव का हो। आई लव यू... मतलब क्या ? हाड़-मांस को प्रेम करना यह प्रेम है क्या ? यह तो प्रेम के नाम पर सत्यानाश करते हैं। तो १४ फरवरी को 'वेलेंटाइन डे' के नाम पर काम-विकार बढ़ाकर देश की कमर तोड़ने का पाप

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने

लिव-इन रिलेशनशिप के दुष्परिणामों को बताया चिंतनीय

कोलकाता उच्च अदालत के अधिवक्ता श्री आशुतोष झा कहते हैं कि 'वास्तव में जिस स्वतंत्रता के नाम पर ऐसे अनैतिक संबंधों को उचित ठहराया जा रहा है वह स्वतंत्रता नहीं, स्वच्छंदता है जो किसी भी दृष्टि से व्यक्ति, परिवार व समाज के लिए हितकर नहीं है। ऐसे संबंध भोगलिप्सा की आग को भड़काते हैं।'

मध्य प्रदेश में एक अविवाहित लड़की एक विवाहित पुरुष के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रहने के लिए घर से भाग गयी। मामला मध्य प्रदेश हाईकोर्ट तक पहुँचा तो कोर्ट ने महिला का निर्णय उचित ठहराते हुए आश्चर्यजनक टिप्पणी की जो न्यायविदों से लेकर आमजनों तक में चर्चा का विषय बन गयी। कोर्ट ने कहा कि 'एक वयस्क महिला को यह मौलिक अधिकार है कि वह अपनी पसंद के व्यक्ति के साथ रहे। ऐसा कोई कानून नहीं है जो उसे अपनी पसंद के पुरुष के साथ रहने से रोके, भले ही वह पुरुष विवाहित क्यों न हो।'

कोलकाता उच्च अदालत के अधिवक्ता श्री आशुतोष झा कहते हैं कि 'वास्तव में जिस

स्वतंत्रता के नाम पर ऐसे अनैतिक संबंधों को उचित ठहराया जा रहा है वह स्वतंत्रता नहीं, स्वच्छंदता है जो किसी भी दृष्टि से व्यक्ति, परिवार व समाज के लिए हितकर नहीं है । ऐसे संबंध भोगलिप्सा की आग को भड़काते हैं।'

हाल ही में एक ऐसा मामला सामने आया जिसमें 'शाने आलम' नामक युवक शादी का झूठा वादा कर एक लड़की के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहा था। युवक ने लड़की के साथ यौन संबंध बनाये और बाद में शादी से इनकार कर दिया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इस मामले का संज्ञान लेते हुए कहा कि 'उच्चतम

शिवजी से सीखें
जीवन जीने की कला

– पूज्य बापूजी

महाशिवरात्रि : १५ फरवरी

भारतीय संस्कृति के ऋषियों-मुनियों, मनीषियों ने वट एवं पीपल वृक्ष में तो अपने परमात्मा को निहारा है, बैल और कछुए में भी अपने परमात्मा को निहारा है। शिव-मंदिर में जाओ तो ऋषभ मिलेगा, कछुआ मिलेगा फिर हनुमानजी और गणपतिजी मिलेंगे, शिवजी बाद में मिलेंगे। ऋषभ और कछुआ - इन छोटे-छोटे जीवों के प्रति भी अपने भाव को उम्दा करो तब शिव को तुम अपने भाव से शिवरूप में जान सकोगे...

१५ फरवरी को महाशिवरात्रि का महापर्व है। इसका महत्त्व क्या है और कैसे यह पर्व हमें संसार में सुखद जीवन जीने की कला सिखाता है इसके बारे में बता रहे हैं पूज्य बापूजी :

महाशिवरात्रि का पर्व मिठाइयाँ खाने का, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने का, घूमने-फिरने का उत्सव नहीं है, यह तो तपस्या-साधना करने का दिन है, व्रत व मौन रखने का दिन है, सादगी-सरलता से जीने और सत्यस्वरूप शिव-तत्त्व में आराम (विश्रांति) पाने का दिन है। इसका व्रत सबको रखना चाहिए। यदि इस दिन दया, क्षमा, ब्रह्मचर्य आदि नियमों का पालन किया जाय तो महाशिवरात्रि व्रत में चार चाँद लग जाते हैं। आप पवित्रता, सच्चाई, प्रभु-विश्वास और भलाई से अपने हृदय को भरते चलो, सफलता एवं उन्नति अपने-आप आपके चरण चूमेंगी।

मानव तस्करी, आतंकवाद में संलिप्त
१००० से अधिक घुसपैठिये हुए गिरफ्तार

हाल ही में अहमदाबाद और सूरत में १००० से अधिक बांग्लादेशी घुसपैठियों को हिरासत में लिया गया। इनमें से कई लोग नशीले पदार्थों के उत्पादन, मानव तस्करी जैसी गतिविधियों में संलिप्त पाये गये। इतना ही नहीं, इनमें से कुछ लोगों का अल-कायदा जैसे आतंकवादी संगठन से जुड़े होने का भी खुलासा हुआ है।

....

पश्चिम बंगाल, झारखंड, असम आदि देश के कई राज्यों की जनसांख्यिकी (जनसंख्या का वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय अध्ययन) बदल रही है, जिससे यहाँ हिन्दुओं की संख्या कम होती जा रही है और मुस्लिमों की संख्या बढ़ती जा रही है। इसका एक प्रमुख कारण घुसपैठ की समस्या है, जो इतना विकराल रूप ले चुकी है कि करोड़ों घुसपैठिये भारत में अवैध रूप से रहकर हमारे संसाधनों, रोजगार-व्यवस्था, स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्रों पर बोझ डाल रहे हैं।

हाल ही में अहमदाबाद और सूरत में १००० से अधिक बांग्लादेशी घुसपैठियों को हिरासत में लिया गया। इनमें से कई लोग नशीले पदार्थों के उत्पादन, मानव तस्करी जैसी गतिविधियों में संलिप्त पाये गये। इतना ही नहीं, इनमें से कुछ लोगों का अल-कायदा जैसे आतंकवादी संगठन से जुड़े होने का भी खुलासा हुआ है।

बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों को एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत भारत भेजा जा रहा है।

ऑनलाइन समाचार पोर्टल 'आपका अखबार' के सम्पादक प्रदीप सिंह कहते हैं : ''एक पूरा तंत्र है जिसके माध्यम से ये लोग यहाँ आते हैं। बॉर्डर पर इनको लिया जाता है फिर अलग-अलग प्रदेशों में भेजा जाता है। इनके फर्जी दस्तावेज बनवाये जाते हैं। उसके बाद ये अपने

श्रीविष्णुसहस्रनाम रसधार

भगवान को क्यों कहा जाता है 'धन्वी' ?

श्रीविष्णुसहस्रनाम में भगवान का ७६वाँ नाम है 'धन्वी' अर्थात् धनुष रखनेवाले । भगवद्गीता (१०.३१) में भगवान स्वयं कहते हैं : **रामः शस्त्रभृतामहम्...** 'मैं शस्त्रधारियों में राम हूँ ।' भगवान के पास धनुष है इसलिए वे धन्वी हैं अर्थात् धनुर्धारी हैं । यह उपनिषद् हमेशा भगवान के साथ रहता है – **धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रम् (मुंडकोपनिषद् : द्वितीय मुंडक, द्वितीय खंड, श्लोक ३)** – (उपनिषद् में वर्णित प्रणवरूप महान अस्त्र – धनुष को लेकर) यह उपनिषद् महान धनुष है । जीव तो प्रयत्नपूर्वक उपनिषद् के ज्ञान का सम्पादन करता है और ईश्वर में यह उपनिषद् स्वभाव से ही विद्यमान होता है । उपनिषद् प्रतिपादित ज्ञान ईश्वर का स्वरूप ही है इसलिए उसका नाम धन्वी है ।

हाथ में धनुष-बाण लिये भगवान राम गोस्वामी तुलसीदासजी के लिए इतने अभीष्ट थे कि वृंदावन में भी उनको द्वारकाधीश की मूर्ति धनुष-बाण लिये दिखाई पड़ी । चाहे श्रीराम हों या श्रीकृष्ण, दोनों को धन्वी कहा जा सकता है क्योंकि यहाँ पर जिस धनुष की ओर संकेत है वह केवल युद्ध में काम आनेवाला धनुष नहीं है । बाहर के शत्रु से लड़ने के लिए जिस धनुष की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार का एक और धनुष भीतर के शत्रु पर विजय पाने के लिए आवश्यक है । इसी धनुष की ओर संकेत करते हुए कहा गया है :

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥

'ॐकार ही धनुष है, यह जीवात्मा ही बाण है और परब्रह्म परमेश्वर ही उसके लक्ष्य हैं । प्रमादरहित तत्परता से उनकी उपासना करनेवाले साधक द्वारा ही वह लक्ष्य बेधा जा सकता है । इसलिए उसे बेधकर बाण की तरह लक्ष्य में तन्मय हो जाना चाहिए ।'

(मुंडकोपनिषद् : द्वितीय मुंडक, द्वितीय खंड, श्लोक ४)

इसी साधना का आधार धनुष भगवान के हाथ में है । इस धनुष का सहारा लेकर हमें आत्मारूपी बाण का संधान करना है ।

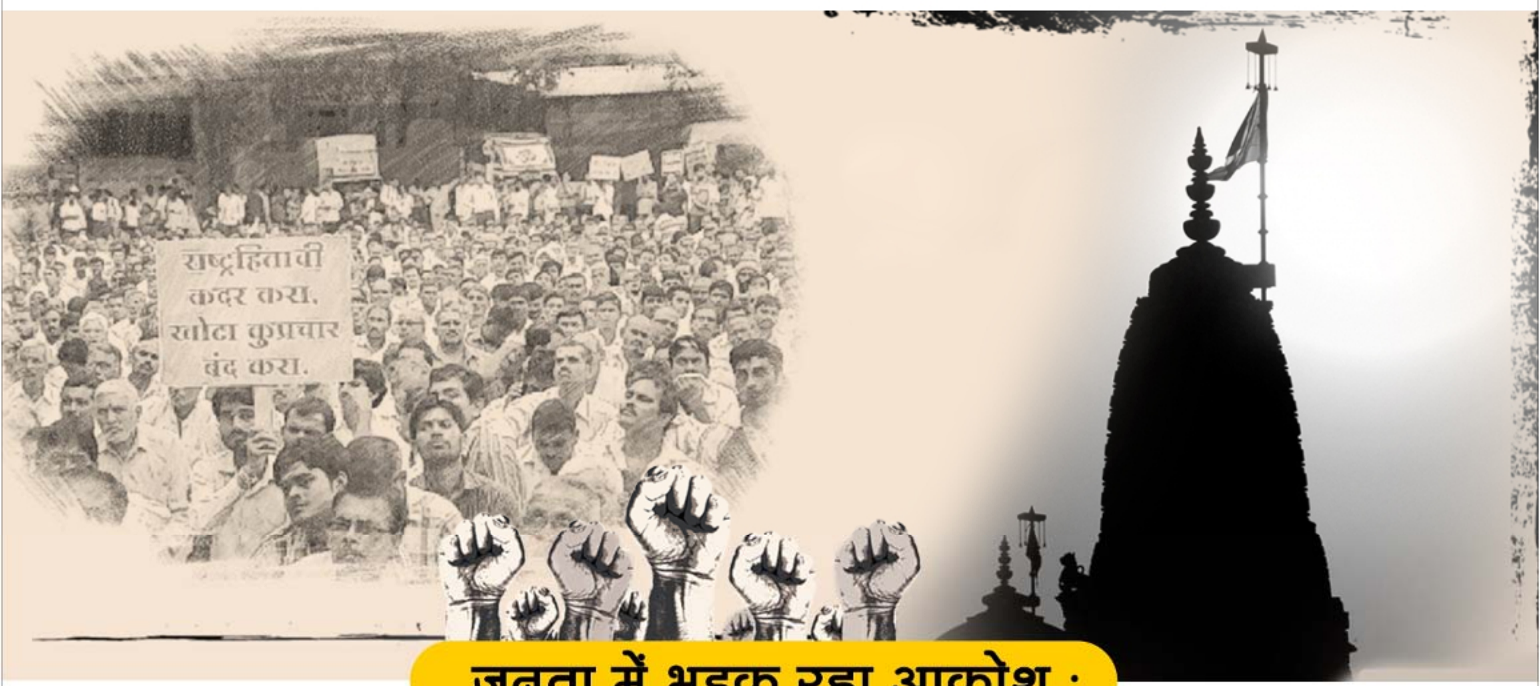

जनता में भड़क रहा आक्रोश :

हिन्दू मंदिरों की पवित्रता पर

आघात पहुँचानेवालों के खिलाफ हो ठोस कार्यवाही

हाल ही में अहमदाबाद और सूरत में १००० से अधिक बांग्लादेशी घुसपैठियों को हिरासत में लिया गया। इनमें से कई लोग नशीले पदार्थों के उत्पादन, मानव तस्करी जैसी गतिविधियों में संलिप्त पाये गये। इतना ही नहीं, इनमें से कुछ लोगों का अल-कायदा जैसे आतंकवादी संगठन से जुड़े होने का भी खुलासा हुआ है।

....

अन्य धर्म के लोगों द्वारा हिन्दुओं के धर्मस्थलों में घुसकर अपने धर्म की गतिविधियाँ करने तथा मांसाहार, नशा-सेवन आदि द्वारा हिन्दू धर्मस्थलों की पवित्रता भंग करने की निंदनीय चेष्टाएँ की जा रही हैं। हाल ही में तमिलनाडु के तिरुपुर जिले में स्थित राजा गणपति मंदिर में एक चौंकानेवाली घटना घटी, जिसमें अजमल खान नामक एक मुस्लिम युवक नशे में धुत्त होकर मंदिर-परिसर में घुस आया और भगवान की प्रतिमा की ओर पीठ करके नमाज पढ़ने लगा। सूचना मिलने पर पुलिस द्वारा उसे हिरासत में लिया गया। हिन्दू संगठनों ने युवक के खिलाफ सख्त कार्यवाही की माँग की।

पहले भी देश के विभिन्न हिस्सों में ऐसे कई मामले सामने आये हैं।

✻ बरेली (उ.प्र.) के केसरपुर गाँव में एक मुस्लिम महिला और उसकी बेटी ने एक प्राचीन शिव मंदिर में नमाज अदा की थी। उन्होंने ऐसा चमन शाह नामक मौलवी के कहने पर किया था,

मिले हुए संस्कार और सत्संग के वचन काम देते हैं

- पूज्य बापूजी

एक लड़का था । वह जब पैदा हुआ उस समय ग्रहों की स्थिति ऐसी थी कि वह डाकू या चोर बनेगा । लड़का ब्राह्मण का था । ब्राह्मणों ने सोचा, 'अब क्या करें ?' वे ले गये उसको एक समर्थ संत के पास । संत ने बालक को आश्रम में रख दिया । बचपन से ही संस्कार अच्छे पड़ गये । सत्संग सुने धर्म का, नीति का, नियमों का । 'सोना चोरी करने से व्यक्ति कोढ़ी होता है । झूठ बोलने से व्यक्ति को यह पाप लगता है । यह चुराने से यह पाप लगता है...' मनुस्मृति में है इस प्रकार का धर्म का उपदेश । जब वह बड़ा हुआ, गुरुकुल से निकला और उसके प्रारब्ध के कुछ संस्कार बाकी थे तो गया चोरी करने । जाकर राजा के महल में घुसा, उठायी चीज तो याद आया कि 'यह तो सोना है, इसकी तो सजा बहुत है ।' फिर चाँदी को हाथ लगाया कि 'इसकी सजा थोड़ी कम है ।' ऐसा करते-करते, कोई कुछ तुच्छ चीज खोजते-खोजते सूखे हुए गजरे पर उसकी दृष्टि गयी । तुच्छ चीज थी वह, जिसकी कोई खास कीमत नहीं थी, जिसे कोई नहीं उठाता, उसने उसे उठाया और जरा सोच रहा था कि क्या करूँ ?

राजा सोया था, स्वप्न देख रहा था, बड़बड़ा रहा था ऐसे ही । राजा ने कहा कि ''यह चीज मेरी है ।'' दूसरी वस्तु को हाथ लगाया तो बोला : ''यह भी मेरी है ।''

ऐसा करते हुए सोचा कि कचरा तो राजा का नहीं है, तो उसे उठाया कि 'यह ले जाऊँ ।' चोरी के संस्कार थे । तब भी राजा बोल पड़ा कि ''यह भी मेरा है ।''

ब्राह्मण लड़के ने कहा : ''यह भी तेरा है ! कैसे, क्या रखा है इसमें ? आँखें बंद होती हैं तो किसीका भी कुछ नहीं रहता । जब तक आँखें खुली होती हैं तभी तक 'मेरा-मेरा' होता है । तुम्हारी आँखें बंद हैं फिर भी कह रहे हो - मेरा-मेरा !'' भड़क उठा, जो कुछ ज्ञान, सत्संग सुना था काम दे गया यहाँ ।

राजा की आँखें खुलीं, बोले : ''क्या ?''

''आप कह रहे हो कि 'यह भी मेरा, यह भी मेरा ।' तो इसमें तुम्हारा क्या है ? इसमें क्या रखा है ? ले जाता हूँ ।''

बोले : ''तुम कौन हो ? महल में कैसे घुसे ?''

लड़का : ''मैं चोर हूँ ।''

''फिर यह क्या ले जा रहे हो ?''

बोला : ''राजा साहब ! मैंने पढ़ा है कि 'फलाना पाप करने से ऐसा फल मिलता है । चोरी

पौष्टिक व बल-वीर्यवर्धक :

सिंघाड़ा

सिंघाड़ा मधुर, शीतल, पौष्टिक, बल व वीर्य वर्धक तथा पित्तशामक है। यह जलन को दूर करता है, पेशाब खुलकर लाता है व रक्तविकार दूर करता है। यह प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन 'ए', 'सी' व कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नेशियम, सोडियम, मैंगनीज, ताँबा तथा लौह आदि पोषक तत्त्वों का अच्छा स्रोत है।

सिंघाड़ा मधुर, शीतल, पौष्टिक, बल व वीर्य वर्धक तथा पित्तशामक है। यह जलन को दूर करता है, पेशाब खुलकर लाता है व रक्तविकार दूर करता है। यह प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन 'ए', 'सी' व कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नेशियम, सोडियम, मैंगनीज, ताँबा तथा लौह आदि पोषक

व्यसनरूपी दैत्य को भगाने में मददरूप सत्साहित्य

जीवन को खोखला करनेवाले व्यसनों से छुटकारा पाने तथा स्वास्थ्य, सम्मान, बरकत एवं कल्याणकारक सन्मार्ग की प्राप्ति हेतु

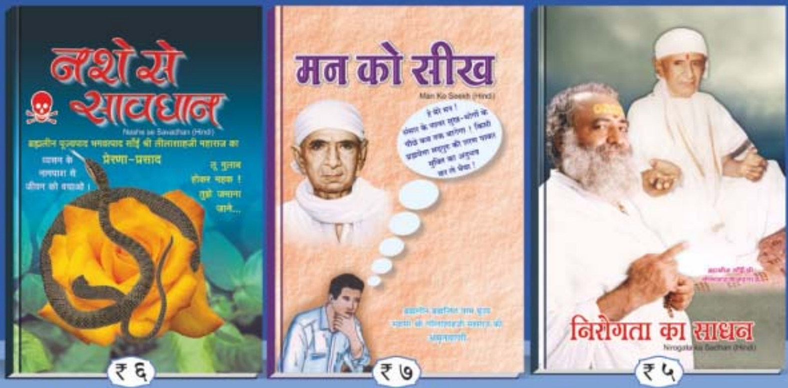

नशे से सावधान मन को सीख निरोगता का साधन

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

सर्दियों हेतु बल-पुष्टिदायी विशेष उत्पाद

खजूर, स्पेशल च्यवनप्राश, ब्राह्म रसायन, द्राक्षावलेह, वज्र रसायन टेबलेट, अश्वगंधा टेबलेट व चूर्ण, अश्वगंधा पाक

स्मृतिवर्धक, रक्तशुद्धिकर व विविध रोगों में लाभदायी

तुलसी अर्क

तुलसी अर्क स्मृति, सौंदर्य व बल वर्धक तथा कीटाणु और विष नाशक है । यह हृदय के लिए हितकर तथा ब्रह्मचर्य-पालन में सहायक है । यह रक्त में से अतिरिक्त स्निग्धांश (LDL) को हटाकर रक्त को शुद्ध करता है । सर्दी-जुकाम, खाँसी, बुखार, दस्त, उलटी, हिचकी, दमा, मुख की दुर्गंध, मंदाग्नि, पेचिश, कृमि, स्मृतिह्रास आदि रोगों में लाभदायी है ।

अड़ूसा अर्क

अड़ूसा (वासा) अर्क संचित कफ को पतला कर आसानी से बाहर निकाल देता है । अतः यह फेफड़ों के विकार, गले में सूजन, श्वास (दमा), खाँसी, टी.बी. जैसे सभी कफजनित विकारों में अत्यंत लाभदायी है । यह कफज रक्तपित्त व उरःक्षत को शांत करता है ।

गिलोय चूर्ण

दीर्घायुप्रदायक श्रेष्ठ रसायन

गिलोय बल-बुद्धिवर्धक, सप्तधातुओं को बढ़ानेवाली, साथ ही कई रोगों का नाश करनेवाली रसायन औषधि है । यह जठराग्नि को बढ़ाकर शरीर में से आमदोष (कच्चे रस) को दूर करती है जिससे अनेकों रोगों से सुरक्षा तो होती ही है, साथ ही रोगों का नाश भी होता है । यह रोगप्रतिकारक शक्ति को बढ़ाकर संक्रमणजन्य अनेकों रोगों से रक्षा करती है ।

रसायन चूर्ण

रोगी-निरोगी सभीके लिए शक्ति, स्फूर्ति, दीर्घायु प्रदायक

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

तुलसी पूजन दिवस से पहले ही देशभर में देखने को मिल रहा है इस दिवस का प्रभाव

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

देशभर में हो रहे राज्य स्तरीय तेजस्वी युवा शिविरों की झलकियाँ

भंडारे व जीवनोपयोगी सामग्री वितरण

लोक कल्याण सेतु की सदस्यता दिलानेवाले पुण्यात्मा

पूज्य बापूजी के दीर्घकालीन सान्निध्य से सुस्पंदित, साबरमती नदी-तट पर स्थित तपःस्थली अहमदाबाद आश्रम में

उत्तरायण ध्यान योग शिविर : ११ से १४ जनवरी

ऋषि प्रसाद सेवाधारियों व श्री योग वेदांत सेवा समितियों की बैठक भी होगी। शिविर का लाभ अवश्य लें और दूसरों को भी सूचित करें।

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक :** राकेशसिंह आर. चंदेल **मुद्रक :** विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी